एक छड़ी पर अण्डा नाचै

डॉ० अमरेन्द्र

एक छड़ी पर अण्डा नाचै

प्रथम प्रकाशन
ई. २००५

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

नूनू बाबू सिनी सें

अरे बुतरुआ पिहनें चश्मा,
होय वाला छौ नया करिश्मा!
जे नै चाहै पढ़ै-लिखै लें,
तहियो ऊँचे-ऊँच चढ़ै लें,
कोय मायने में ज्ञान नै कम,
पन्नी रँ बुद्धि चमचम,
ओकरों लें छै अवसर चानी,
है ले एक सौ एक पिहानी!
अरे बुतरुआ इन्टु-पिन्टु,
आनलें छियौ नया निघन्टु,
घोकें, दुसरौ कें घोकबाव,
अबकी नै छोड़ना छै दाव।
तहूँ बहावें ज्ञान रों बोहों,
पंडित-ज्ञानी मानतौ लोहों।

—अमरेन्द्र

१

सूँढ़ गणेशों के जे लागै,
कभी गणेशों केरों पेट,
ओकरों वास्तें बात बरोबर
की छत-छप्पर, धरती-हेट ।

—कद्दू

२

एक गणेश जी हेनों देखलां
सूँढ़ कमर सें लटकै छै;
भरी-भरी लड्डू की मिलतै
एक चौंर लें भटकै छै।

—मूसों

३

माथा पर छै मुकुट बिराजै,
मुँह के नीचें छोटका सूँढ़,
बगुलौ सें जादा बगबग छै,
जेकरों बोली तिलकुट-गुड़।

—शंख

४

कारों बदरा धरती पर,
देखी दुश्मन थर, थर, थर,
घूमै सबके घरे घर,
मारों तें छिलकै ऊपर ।

—छाता

५

बेटा दुबरों, कोठी बाप,
ब्रह्मा के देलों छै शाप,
ओंन जरो नै कभियो खाय,
पानी पीयै ओछरी जाय ।

—गिलास-लोटा

६

एक ठो हेनों छाता है
तनलों रहै जे सालो भर,
छाता में सौ भुरकी झलकै,
कपड़ा उड़ै छै फर-फर-फर;
जोंर-जनानी मर-मरदाना
गैया-बकरी ओकरे तर।

—झबरों गाछ

७

एक छड़ी पर अण्डा नाचै
जैमें चिड़ियाँ आवै-जावै;
अण्डे गिरै नै छड़िये डोलै
कत्तो कोय्यो जोर लगावै ।

—गाछ

८

भरी मुँहों में ऐला-गोटी
जतना बोली तित्तों छै;
मुँह लटकैनें झुलतें रहतौं
सब्भे बल पर जीत्तों छै ।

—करेला

९

एकठो बूढ़ों हेनो भी छै
नाक, कान, जी, कुछुवो नै;
भरी मुँहों पर दाँते देखों
बोलें; फेरू पूछुवौ नै ।

—भुट्टा

१०

लाल पटोरी पिन्ही डायन
जखनी जेकरा चाहै खाय,
खाय वक्ती नै पानी पीयै
पीयै तें ऊ मरिये जाय ।

—आगिन

११

अजगर-अजगर मिली-जुली
कहीं सटी कें कहीं खुली,
कोसो चलै, नै मानै छेक,
टरक दबैलौं मरै नै एक ।

—सड़क

१२

देह छुवै, देह छुवै नै दै।
के छेकी हेनी, के छेकी है ?

—हवा

१३

गावै खुब्बे, हिलै नै ठोर,
कानै छै पर गिरै नै लोर,
गला दबैवौ, कुछ नै बोलतौं,
कान अमेठवौ, हाँसतै रहतौं।

—रेडियो

१४

एक चौ॔र एक बित्ता के,
भीतर फोंकी, ऊपर ठोस;
फूकी अगर उड़ावों जों तोंय,
फोंकी गूंजै भर-भर कोस ।

—शंख

१५

बेलुन हेनों फूलै-पचकै,
तार जकां जे कभी नै लचकै;
पानी छोड़ी गरमी पीयै;
चमगादड़ रं जिनगी जीयै ।

—छाता

१६

खड़ा शीत में खाड़े रहै छै
सौंसे मुँह, ढाँकी कें गाँती;
गाँती हटें तें खलखल हाँसै,
दाँत देखी कें लागै दाँती।

—भुट्टा

१७

हेनों छै ई घर के धुनियाँ
मूँ में सूतों, कमर में सुइया,
गेंदरा की यैं सीतै धुनियाँ,
कपड़ा चीरै, छीटै रुइया ।

—मूसों

१८

पाँच भाय में सबसें छोटों
जत्तें नाँटों ओत्तै मोटों;
है नै खाली एक्के छोटका
सब्भैं बोली बुलावै—मोटका।

—अंगूठा

१९

एक किला पर पाँच सिपाही,
पाँचो-पाँच रकम के छै;
जे बूझै कि मेल नै यैमें;
ऊ नै कोय करम के छै ।

—पाँचो अंगुली

२०

धरती पर हेनों एक बदरा
जैसें उजरों पानी बरसै;
सबटा पानी नरिये पीयै,
खेत-खेत पानी लें तरसै ।

—गाय

२१

देखों जबें किताबे पर छै,
कपड़ो के ओल्है शौकीन;
तहियो एक नै अक्षर जानै,
नाँगटै घूमै भारत-चीन ।

—मूसों

२२

पीढ़ा पर बैठली इक बुढ़िया
घुमी-घुमी गावी कें खाय;
नाकें बाटें जे कुछ निगलै,
मुँह दै कें सब उगली जाय।

—चक्की

२३

एक राकस के मुँह अजूबा,
आँखे सीधी में मुँह-नाक;
गल्ला बाटें खैलों उगलै,
निगलै वक्ती पारै हाँक।

—चक्की

२४

दू नालों के इक बन्दूक,
बन्दूक लागै छै सन्दूक;
एक साथ गोलियै नै चार,
छोड़वैय्या के गोड़ो पार।

—पैजामा

२५

पानी पर एक राकस दौड़ै
मुँह में लैकें लोग पचीस;
मुँह में जाय लें मार करै सब,
मुँह में लैकें माँगै फीस।

—नाव

२६

उड़तें कोंन चिड़ैयाँ के ई
कटी गेलों छै डैनों-पाँख?
लोर-चुआवै ढर-ढर, ढर-ढर
फोटो लेलें घूमै आँख ।

—नाव

२७

के जानै छैं ऊ नावों कें
जे कि पानी में नै तैरै;
पानी ही जेकरा में तैरै
खेवै, गोरी गुन-भावों कें ।

—दीया

२८

हेनों इक सूरज छै मस्त,
रात्है रोशन, दिन में अस्त ।

—दीया

२९

आँख-कान नै, खाली जी छै,
जी सें जेकरा चाहै चाटै;
कुआँ-पोखरी डरैं नै जाय छै,
मोंन; नहैवों, सुनिये फाटै ।

—आग

३०

अजब कहानी इक नारी के,
आँख क्रोध सें रत-रत लाल;
चूल तें एकदम हिन्दुस्तानी,
ईंगलिस्तानी गोरों गाल।

—आग

३१

सौ सैनिक-शव, इक ताबूत;
जली कें सबटा राख-भभूत ।

—दियासलाई

३२

सौ संबंधी मरलों-भतलों
इक कुइयाँ में पैलों गेलै;
एकेक करी कें खींची-खींची
बाहर करी जलैलों गेलै ।

—दियासलाई

३३

चिकनों-चिकनों देह गठीला,
हेनों रूपवती ऊ लीला;
अपना दिस केकरा नै घींचै
देखवैय्या के फोटो खीचै ।

—आईना

३४

बोलै कुछु नै बड्डी घाय,
बहुरूपिया रं भेष बनाय;
जेकरा देखै होने लागै,
घोर अन्हरिया देखी भागै ।

—आईना

३५

एक जनानी कें भटियैलें
हवा उड़ैलें चल्लों जाय;
उड़ी जनानी गेलै हिमालय
घुमी-घुमी कें लोर बहाय ।

—बदरा

३६

अभी-अभी ई भालू छेलै,
इखनी हाथी लागै छै;
चाबुक खैथैं कानें लागलै
लोर बहैतें भागै छै ।

—बदरा

३७

भरी मुँहों पर बारह टिकुली,
सब्भे कें ऊ खूब सोहाय;
ठोड़ी, गाल, कपारों पर जे
दोनों आँख नचैलों जाय ।

—घड़ी

३८

एक घरों में बारह बच्चा,
माय-बाप सब साथे छै;
सब बच्चा हरदम्में रुसलों
गोड़ डुलाय नै माथे छै;
माय-बाप घूमी समझावै
कुछ हेनों ही बाते छै ।

—घड़ी

३९

जादू छड़ी घुमैथैं घन-घन
अंगुठा पर नाँचै इक चक्का;
जे बतलैतै ओकरा लड्डू,
नै बतलैतै ओकरा मुक्का ।
—चाक

४०

माँटी के थाली पर माँटी,
जैसें निकलै लोटा-बाटी ।
—चाक

४१

भरी देह पर माँस कहीं नै,
बाहर हड्डी, भीतर खून;
पढ़ै में ओकरों माथों भारी,
लिखै के धुन बस, कत्तो धून।
—कलम

४२

काठों के देह-गोड़,
लोहों के नाक;
जीहा छै आरी के
तालू दू फाँक ।
—कलम

४३

आँख, नाक, जी, सब्भे कुछ छै,
हाड़ो देह में, खूनो ठो,
अलग करै, जोड़ी भी लै छै
धड़ आ मूड़ी दोनों ठो,
जन्मे सें बोंगों छै हेन्हों;
लोहों,काठ, शिला छै जेहनों ।
—कलम

४४

अजब विधाता केरोॅ खेल,
खाली मुँह-कानोॅ के मेल;
दाल-भात कुछुवो नै खाय छै,
तरकारी सब निगली जाय छै ।

—लोहिया

४५

धरती पर पानी, आकाशोॅ में आग,
गरजै छै मेघो भी गड़-गड़ के राग।

—हुक्का

४६

नै देखलेॅ होब्हैं तोंय
हेनोॅ मटकुय्याँ;
पानी के बदला में
आग आरो धुय्याँ ।

—चीलम

४७

दूधोॅ सेॅ दू चम्मच भरलोॅ,
दूध में तैरै एक-एक मक्खी;
मिली उड़ावै सौ-सौ पंखा,
तहियो उड़ै नै, गेलै थक्की।

—आँख आरो पिपनी

४८

दू नौका में एक-एक तिरिया,
नाव चलावै सालौ सेॅ;
नाव गढ़ैया में फँसलोॅ छै,
निकलै नै, निकाल्हौ सेॅ।

—आँख

४९

सिर पर टोकरी, मुँह में खन्ती,
गहना सें लागै कुलवन्ती;
पाट-पटोरी सब कीमती है,
गाछ खोदै छै, मतछिमती है।

—कठखोद्दी

५०

एक डायन के दाँत पचास,
जेकरों सखी सुखैलों काठ;
डायन हेनों कि निगली गेलै
सखिये केरों बेटा साठ।

—आरी

५१

घड़ियाले रं चोखों दाँत,
पानी पर जे बुलै नै जाय,
जंगल-जंगल खाली घूमै,
जीव के बदला गाछे खाय ।

—आरी

५२

तीर-धनुष सें कसलों-बंधलों
फहरै केन्हों खड़ा रूमाल,
ऊपर-नीचें पिछुआवै छै
जात्है कें, जाते छै काल।

—गुड्डी

५३

एक चिड़ैयाँ हेनों कोंन
जेकरों माँस नै खैलों जाय,
जेकरों खोता मिलै कहीं नै,
गाछ नै बैठै, उड़ै उघाय ।

—गुड्डी

५४

भगजोगनी सें भौरा जन्मै,
कोय्यो नै यै पर पतियावै;
पंख जेन्है भौरा सें निकलै,
उड़ी-मुड़ी आँखें पर आवै।

—काजल

५५

सोनों के देह, मूड़ी कारों,
मौगी-मरद सभै कें प्यारों,
हौल्कों जेना हवै रँ ऊ
लीपै केरों मनाही छै।
माय कहै ई विपदाहारी,
बच्चा लें ई आफत भारी ।

—काजल

५६

अंगुरी में अंगुठी रं बैठै
आरी केरों सहेली,
अमरेन्दर भी नै बूझै छै
हेनों छिकै पहेली ।

—कैंची

५७

पीछू कटै तें कौआ बोलै,
आगू कटै तें बगरो;
बैठै तें हाथे पर बैठै
मिलै घरे-घर सगरो ।

—कैंची

५८

हेनों पेट मुटैलों छै कि
गोड़ दिखै नै हाथ दिखै,
खाय लें वैद्य मना करलें छै,
मुँह बैलें दिन-रात दिखै,
हेनों आबें जिनगी जीयै,
पेट भरी बस पानी पीयै।

—घैलों

५९

पीछू कटै तें दारू पीयै,
आगू कटै बटोही;
तीन वर्ण के; नर कें मोहै
चिड़ियाँ लें निरमोही ।

—सुराही

६०

बान्हलों राखै रातो पगड़ी,
गल्ला में टाई कें जकड़ी;
भरी रात तक सुतले रहतौं
बन्द करी कें आपनों द्वार;
भोरे उठी कें पहरा देथौं
हेनों तें ऊ पहरेदार ।

—मुर्गा

६१

सुतला कें दै हाँक जगावै;
असकल्लो में हाँसै-गावै,
बात सुनै सब, बात कहै सब,
सब्भे कें एकरा सें मतलब।

—टेलिफोन

६२

लम्बा मूँ के एक छवारिक
टीक पचासो हाथों के;
मुँह पर रखों तें कान पकड़तौं,
झूठ नै एक्को बातों के।

—टेलीफोन

६३

दू गोतिया के बत्तीस भाय,
खइयो वक्ती करै लड़ाय;
कत्तो लड़ै, कहीं नै जाय
साथैं खाय, बरोबर खाय ।

—दाँत

६४

एक्के कोठरी, एक्के द्वार,
सुतली छै इक रानी जैमें;
दरवाजा के भीतर घेरी
पहरोदार खड़ा छै वैमें।

—जीभ आरो दाँत

६५

शीशमहल में राजकुमारी
जल सें ऊपर हाँसै छै,
कारी बुढ़िया आवी रोजे
राजकुमारी फाँसै छै ।

—लालटेन

६६

एक अजूबा पहरेदार
खाना खाय नै टपकै लार,
दाँत बिना ही डोलै-झूमै,
दाँत लेलें घरवैया घूमै ।

—ताला-चाभी

६७

देह भले छै ओकरों खोल,
बिन चमड़ा के जेन्हों ढोल;
राजा-नौकर कुछ नै जानै,
सोनों-लोहों कुछ नै मानै;
ओकरा तें बस एक्के हूब,
औंगरी पकड़ी झूलौं खूब ।

—अंगुठी

६८

चक्कै ही चक्का कें खाय,
जाय के बदला दिन-दिन आय।

—दिनाय

६९

एक्के मुँहे पचासो दाँत,
नै कहीं हड्डी, नै कहीं आँत;
यहू हुऐ नै, खाय या चाखै
खाली चिड़ियाँ मुँह में राखै ।

—पिंजरा

७०

एक पोखर में सौ-सौ कुइयाँ,
मिसरी रं कुइयाँ रों पानी;
ऊ कुइयाँ रों एक जोगवारिन,
सब जोगवारिन के एक रानी;
पोखर के नै ठौर-ठिकान,
केकरौ-केकरौ एकरों ज्ञान ।

—मधुमक्खी-छत्ता

७१

पानी जेकरों कैलों-कैलों,
सौ-सौ मुँहों के एक्के घैलों।

—मधुमक्खी-छत्ता

७२

दू बित्ता में गर्दन आवै,
पाँजों भरी में पेट;
गद्दी पर सें कभी नै उतरै
भरलो पेटें हेट ।

—घैलौं

७३

पोता बाबू-गोद नुकैलै
सब नजरी सें डरी-डरी,
चाँदी के बाटी में पोता
दूध पियै छै भरी-भरी ।

—नारियल

७४

पर्वत ऊपर घास जमैलौं,
पर्वत तर संगमरमर;
संगमरमर के नीचें कुइयाँ
जै नै बुझै, ऊ बानर ।

—नारियल

७५

चारो दिस जंगल घनघोर
जैमें बैठलौं कारों चोर;
चोर हेनो; नै लूटै-पाटै,
बैठलौं-बैठलौं चुट्टी काटै ।

—ढीलौं

७६

दोनो कान अमैठै जेन्हैं,
दुनियाँ साफ दिखावै तेन्हैं ।

—चश्मा

७७

कारों वन में कारों तिल,
जे बीया नै जेकरों बिल;
घूमै मौजों-मस्ती सें।
बची पुलिस के गश्ती सें
जों पकड़ैलों चोरी में
मारले जाय बरजोरी में।

—ढीलों

७८

गोड़-हाथ, देह-मुंडी नै छै
भले नै बोलै, ऊ बूलै छै ।

—जोंक

७९

बित्ता भर के सनसनाठी,
कुकड़ै तें औंगरी भर काठी।

—जोंक

८०

दू गोड़ों के बीच्हौं गोड़;
सौसें देह में बीसो जोड़;
दू हाथो छै, मुड़िये गैब;
आपने चलै नै, यहें ठो ऐब।

—साइकिल

८१

सब गामों के, सब देशों के
हाल सुनावै आवै चिड़ियाँ;
डैना—लाल, हरा, पीला छै,
कोंन राग नै गावै चिड़ियाँ;
दिन भर खुब्बे शोर मचाय,
दिन आवै, साँझै मरी जाय।

—अखबार

८२

बिना डोलैलें जरो नै डोलै,
दुनिया भर के बोली बोलै;
कान मोचारों तें ठिठियैतौं,
कानतौं, बोलतौं, गाना गैतौं ।

—रेडियो

८३

दूधे रं उजरों देह,
कारों मन कौआ,
गर्दन रं टाँग दिखै,
पेटे अबढौआ ।

—बगुला

८४

चारे अक्षर गजब करै,
पीछू तीन कटै तें मूँ छै;
आगू दू कटथैं सुख-चैन;
आगू एक कटै, तें सब छै,
पीछू दू कटै, तें मूसों ।
वैं की बुझतै, जे खाय भूसों ।

—मुसकल

८५

गल्ला में कंठी छै,
कंठों में राम;
साधू रं चोला छै
तहियो बदनाम ।

—सुग्गा

८६

उजरों रहै तें सब्भे केरों
उजरों दाँत उमैठै,
लाल हुऐ तें लाल ठोर पर
सबके जाय कें बैठै ।
—आम

८७

उजरों रहै तें कचकच-खपखप,
नै कस्सों, नै खट्टा ऊ;
लाल हुऐ तें आम बनै छै,
मोती खाय कें पट्ठा ऊ ।
—पपीता

८८

चमड़ी भीतर कसलों माँस,
माँसों पीछू हड्डी;
हड्डी बादे फेनू माँसे
ओकरों बाद फिसड्डी ।
—आम

८९

हरमोनियम के अपनों भाय
पर गावै में घोर लजाय;
दाँत छियालिस, चौव्वौ दस,
अक्षर सबटा घोघलों—बस ।
—टाईपराइटर

९०

खुद्दे अन्हरों, आँख कहावै,
दूसरा कें दुनियाँ दिखलावै;
वैसें बड़ों नै कोय शैतान
नाको पकड़ै, पकड़ै कान ।
—चश्मा

९१

दिन भर सूतै फोंफी मारी,
जगै रात भर वन-बहियार;
चोर देखी कें बिल में घूसै,
हेनों तें ऊ पहरेदार।

—उल्लू

९२

बिन छिलके के मटरों दाना
सालो साल छँटै नै छै;
दूसरा कें वें काटी राखै
आपने मतर कटै नै छै ।

—दाँत

९३

देहों में काँटों छै,
पेटों में आँख;
माँस बड़ी मिट्ठों छै
छीलों जों पाँख ।

—लीची

९४

खुल्ला मूँ सें झाँकै नाक,
सौंसे गाँव में पारै हाँक;
माथों पीछू बान्हलों खोपों,
चूल नै छै कि तेल कें चोपों ।

—लाउडस्पीकर

९५

वन-वन दर-दर खाली भटकै;
दूसरा के हिस्सा कें झटकै;
घर ढुकथैं सबकें धमकावै;
ऊ नर के बाबा कहलावै!
आबें ओकरों नाम बताव,
नामे में छिपलों है भाव ।

—बानर (बा-नर)

९६

दूए धौनों, दूए हाथो
जन्मे सें पर टेंगड़ी चार;
कमरो, पेटो, पीठियो ठो छै
पर देखों नी मूड़िये पार ।

—कुर्सी

९७

एक कमर सें सटलों-सटलों
दू मूड़ी, दू हाथ,
बच्चां-खच्चां कुछ नै बूझै
बन्दर बूझै बात।

—डमरू

९८

मुड़िये ठो नीचें छै, गोड़े ठो ऊपर,
चुटकी के तालों पर नाँचै छै सर-सर;
नै तें ऊ नरिये ही, नै तें ऊ भूत;
निगलै छै रूई कें उगलै छै सूत।

—तकली

९९

स्त्रीलिंग होय धान कें कूटै,
पुलिंग होय धोती पर टूटै;
अमरेन्दर के बूझ पिहानी
नै तें धौल जमैतौ नानी ।

—ढेका (ढेकी)

१००

सौंसे ठो देह, मुँह कारों कजरोटी,
माथा में चूल, नै ढेका में चोटी।

—कौआ

१०१

गरमी देखी झरकी ओकरा,
रात्हौं-दिन्हौं खूब नहाय;
ओकरौ पर पंखा डोलाबै,
आदमी देखै, जाय विलाय;
बोल, छिकै ऊ कोंन परी?
जों खाना छौ झोलबरी ।

—मछली